प्रकाशन, सूचना एवं संचार

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद द्वारा प्रकाशन, सूचना एवं संचार के क्षेत्र में गतिविधियां जारी रखी गईं। *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च* को med IND फुल टेक्स्ट ऑन–लाइन डेटाबेस में शामिल किया गया तथा यह इंटरनेट पर निःशुल्क फुल टेक्स्ट भी उपलब्ध है। समुदाय में स्वास्थ जागरूकता को बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान/वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

परिषद की वेबसाइट (*http:/www.icmr.nic.in*) जिस पर परिषद मुख्यालय एवं सभी आई सी एम आर संस्थानों/केन्द्रों की गतिविधियों पर सूचना उपलब्ध है, को निरन्तर अपडेट रखा गया।

प्रकाशन

नियत कालिक प्रकाशन

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च

इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आई जे एम आर) को विश्व की सभी प्रमुख वर्तमान जागरूकता एवं सतर्कता सेवाओं द्वारा सूचीबद्ध करने और सारांश प्रकाशित करने का कार्य जारी रखा गया। *आई जे एम आर* इंटरनेट (*www.icmr.nic.in*) पर निःशुल्क फुल टेक्स्ट उपलब्ध है तथा इसे ICMR-NIC जैव आयुर्विज्ञान के ऑन–लाइन फुल टेक्स्ट डेटाबेस medIND में भी शामिल कर लिया गया है।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान अप्रैल 2005 में एच आई वी/एड्स पर एक विशेष अंक प्रकाशित किया गया। डॉ रार्बट सी. बोलिंजर इस विशेष अंक के अतिरिक्त सम्पादक थे। मार्च 2006 में "लीशमैनियता" पर एक दूसरा विशेष अंक प्रकाशित किया गया, जिसके डॉ सी. पी. ठाकुर एवं डॉ एस. के. भट्टाचार्य अतिथि सम्पादक थे। समसामयिक विषयों जैसे डेंगी वैक्सीन, ब्रेस्ट ट्युबरकुलोसिस, भारत में ब्रुसीलोसिस, इपिजेनिटिक चिकित्सा, आदि पर भारत एवं विदेशों के उत्कृष्ट वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए पुनरीक्षण (रिव्यू) लेख प्रकाशित किए गए।

आई सी एम आर पत्रिका

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान आई सी एम आर पत्रिका के मई–जून 2004 से दिसम्बर 2004 तक के अंकों का प्रकाशन किया गया।

एन्युअल रिपोर्ट (वार्षिक प्रतिवेदन)

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान परिषद की वर्ष 2004-2005 की एन्युअल रिपोर्ट तथा इसके हिन्दी रूपान्तरण–वार्षिक प्रतिवेदन को प्रकाशित किया गया। इसके कवर पेज डिज़ाइन एवं टेक्स्ट पेज़ेस ले आउट में उल्लेखनीय सुधार आया है। परिषद की वेबसाइट *http://www.icmr.nic.in* पर परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों की एन्युअल रिपोर्ट उपलब्ध है।

आई सी एम आर के अन्य नियतकालिक प्रकाशन

परिषद के कई संस्थानों/केन्द्रों द्वारा अंग्रेजी तथा हिन्दी में मासिक न्यूज़ लेटर्स का प्रकाशन किया गया।

सूचना विज्ञान और संचार

जैवआयुर्विज्ञान संचार

आई सी एम आर–एन आई सी केन्द्र के वेब पेज जिसमें प्रदान की जाने वाली सेवाओं पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध है पर 3,40,000 से ज्यादा हिट्स किए गए। इसका वेब पेज *http://indmed.nic.in* को गूगल डायरेक्टरी द्वारा प्रमुख भारतीय स्वास्थ्य वेबसाइटों में शामिल किया जाना जारी रखा गया तथा वर्तमान में यह प्रथम (पहले) नम्बर की स्वास्थ्य वेबसाइट है। केन्द्र द्वारा पोस्ट एवं ई–मेल द्वारा 806 सर्चों के लिए आग्रह किया गया। वर्तमान में med IND डेटाबेस में 38 जर्नल शामिल हैं तथा वर्ष 2003 एवं 2004 के जर्नलों का भविष्य प्रभावी (प्रास्पेटिव) कवरेज (प्रभावसीमा) पूर्ण कर लिया गया है तथा वर्ष 2005 एवं 2006 के लिए नए तथा साफ्ट कापी फॉर्मेट में प्राप्त जर्नलों का कवरेज़ पूर्ण कर लिया गया है। ऐसे जर्नलों जिन्होंने विषय–सूची प्रदान की थी उनका वर्ष 2000 में पूर्ववर्ती कवरेज़ पूर्ण कर लिया गया है। IndMED डेटाबेस के लिए जर्नलों की इंडेक्सिंग जारी है तथा वर्तमान में इसमें 36,000 रिकार्ड्स शामिल हैं। यूनियन केटालॉग ऑफ बायोमेडिकल पीरियाडिकल्स जो *http://uncat.nic.in* पर उपलब्ध है को 40 से अधिक पुस्तकालयों से नवीनतम होल्डिंग्स को शामिल करके अपडेट (आधुनिकी कृत) किया गया। वर्ष 2005-06 के दौरान जैवआयुर्विज्ञान सूचना प्राप्ति पर 3 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में भाग लेने वालों में मेडिकल/पुस्तकालय से सम्बद्ध पेशेवर शामिल थे। प्रशिक्षण मैन्यूअल की केन्द्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराने के साथ–साथ प्रशिक्षण में शामिल लोगों को इसकी हार्ड कापी वितरित की गई।

विज्ञानमितीय अध्ययन

आई सी एम आर के संस्थानों का उनकी स्थापना के बाद से विज्ञानमितीय अध्ययन किया जा रहा है। अब तक 6 संस्थानों यथा–राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्र रोग संस्थान, कोलकाता, यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई, रोगवाहक नियन्त्रण अनुसंधान केन्द्र, पाण्डिचेरी, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, प्रतिरक्षारुधिरविज्ञान संस्थान, मुम्बई तथा आयुर्विज्ञान कीटविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, मदुरई को

शामिल किया गया है। नियमित प्रकाशन विश्लेषण–वर्ष के अनुसार, जर्नल विश्लेषण, लेखक उत्पादकता (वर्ष अनुसार) तथा सर्वाधिक शोध पत्र लिखने वाले लेखकों की पहचान के अतिरिक्त वैश्विक द्वितीयक सेवाओं द्वारा लेखों के वार्षिक कवरेज़ तथा सामान्यीकृत इम्पैक्ट फैक्टर के आधार पर जे सी आर कवर्ड शोध पत्रों का विश्लेषण किया गया है। इस अवधि के दौरान, लेख द्वारा शामिल विषयों का रुझान विश्लेषण इन सभी संस्थानों का प्रत्येक के लिए कम्पयुट किया गया है इन संस्थानों द्वारा प्रकाशित कुल शोध पत्र इस प्रकार से थेः राष्ट्रीय हैज़ा तथा आंत्ररोग संस्थान, कोलकाता (1964-2000)–721, रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केन्द्र, पॉण्डिचेरी (1977-2000)-488; प्रतिरक्षारुधिर विज्ञान संस्थान, मुम्बई (1952-2000)-441, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान केन्द्र, दिल्ली (1977-2000)-628, यक्ष्मा अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई (1958-2000)-521 एवं आयुर्विज्ञानी कीटविज्ञान अनुसंधान केन्द्र, मदुरई (1981-2000)-70 इस सभी संस्थानों लेखों के इंडेक्स मेडिकल्स एवं जर्नल साइटेशन रिपोर्ट्स द्वारा कवरेज़ से प्रति वर्ष बढ़ती संख्या तथा अपेक्षाकृत उच्च इम्पैक्ट फैक्टर्स सहित जर्नलों के चयन का संकेत मिलता है। लेखकों के प्रतिरूप से 3 या 4 लेखकों के साथ सहयोगी शोध पत्रों की (आई सी एम आर के अतिरिक्त अन्य संस्थानों में भी) बढ़ती संख्या का पता लगा। विषय के आधार पर विश्लेषण करने पर पता लगा कि अधिकांश मौकों पर संस्थान अपने बताए गए क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं।

सभी आई सी एम आर के संस्थानों का केवल स्कालर्ली जर्नलों में प्रकाशित शोध पत्रों के बिबलियोग्राफिक वर्णन के साथ एक सर्चेबल डाटाबेस तैयार किया जा रहा है। इस डेटाबेस में अब तक 8 संस्थानों को शामिल किया गया है।

उल्लेखनीय अनुसंघान आउटपुट (III बैच) के लिए आई सी एम आर ग्रांट हेतु आवेदनों के मूल्यांकन एवं चयन हेतु परिषद मुख्यालय, नई दिल्ली में 29 अक्टूबर, 2005 को एक विशेषज्ञ दल की बैठक सम्पन्न हुई तथा राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के उप निदेशक डॉ एम. रघुनाथ का चयन किया गया।

जैवसूचना केन्द्र

आई सी एम आर की वेबसाइट *http://www.icmr.nic.in* को नियमित रूप से अपडेट (नवीनीकृत) किया जाता है। इस वेबसाइट पर उपलब्ध सूचना में शामिल हैः आई सी एम आर मुख्यालय एवं इसके संस्थानों की एन्युअल रिपोर्ट (वार्षिक प्रतिवेदन), आई जे एम आर का फुल टेक्स्ट वर्जन, परिषद के एक्सट्राम्युरल एवं इन्ट्राम्युरल अनुसंधान से सम्बद्ध सर्चेबल सूचना, मानव एवं जन्तु अनुसंधान के लिए जैवनीतिविषयक पेज, एच आई वी रिपोज़िटरी, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सम्मेलनों, रोज़गार के अवसरों, लघुकालिक स्टुडेन्टशिप, पुरस्कार, इमेरिटास वैज्ञानिक आदि की सूचना। एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान परियोजना के लिए जमा किए गए प्रस्ताव की स्थिति का पता लगाने के लिए एक नया विकल्प वेबसाइट पर उपलब्ध कराया गया। आई सी एम आर वेब साइट पर प्रति माह औसतन 6.9 लाख हिट प्राप्त किए गए।

परिषद के प्रकाशन जैसे सहायक प्रजनन प्रौद्योगिकी (ART) दिशानिर्देश, मानव विषयों पर अनुसंधान हेतु नीतिविषयक दिशानिर्देश, जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग हेतु दिशानिर्देश, बौद्धिक सम्पदा अधिकार नीति दिशानिर्देश आदि भी परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। तदर्थ अनुसंधान योजनाओं/फेलोशिप, वैज्ञानिक पदों, परिषद के पुरस्कार, आदि के लिए आवेदन करने हेतु आवेदन फार्मेट को वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

एन आई सी द्वारा विकसित फाइल मूवमेन्ट साफ्टवेअर जिसे ऑफिस प्रोसीजर्स आटोमेशन (OPA) के नाम से जाना जाता है, को आई सी एम आर में भी लागू किया गया। इस साफ्टवेअर को BIC सर्वर पर लगाया गया है। इस साफ्टवेअर के माध्यम से विभिन्न प्रयोगों के बीच फाइल के मूवमेंट का पता लगाना काफी आसान हो गया है।

इस केन्द्र के द्वारा एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान के डाटाबेस को बनाए रखा जाता है। वेब के माध्यम से इन डाटाबेसों तक की पहुंच बनाने की योजना है। एक आधुनिक 1BM सीरज़ कम्प्यूटर प्रणाली को प्राप्त किया जा रहा है, जिसके प्रयोग के द्वारा इसको प्राप्त किया जा सकेगा।

इस केन्द्र द्वारा सभी आई सी एम आर संस्थानों एवं केन्द्रों की नेटवर्किंग की एक परियोजना पूर्ण कर ली गई। इस परियोजना के कार्य के अंतर्गत आई सी एम आर के 32 स्थानों पर लोकल एरिया नेटवर्क (LAN) को लगाया/नवीनीकृत किया गया है। एक मेल सर्वर *पबउतण्वतहण्पद* विकसित किया गया है। तथा आई सी एम आर के सभी वैज्ञानिकों को इस सर्वर के द्वारा ई–मेल पहुंच प्रदान की गई है। सभी स्थानों (लोकेशन्स) पर मेल एवं इंटरनेट पहुंच के लिए ISDN कनेक्शन उपलब्ध कराया गया है।

स्वास्थ्य सूचना का प्रसार

हिन्दी दिवस समारोहों के अंतर्गत दिनांक 20 सितम्बर, 2005 को हिन्दी में एक वैज्ञानिक वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके लिए चुने गए विषय थे (i) समाज पर स्टेम सेल अनुसंधान के भावी प्रभाव तथा (ii) स्वास्थ्य पर बढ़ते शहरीकरण के परिणाम। परिषद मुख्यालय तथा दिल्ली स्थित संस्थानों के कुल 16 वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लिया। विजयी लोगों को पुरस्कार एवं सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।